UP Board Class 6 Geography Notes Chapter 8 भारत का भौतिक स्वरूप

भारत भौतिक विविधताओं का देश है। यहाँ लगभग सभी प्रकार की स्थलाकृतियाँ पाई जाती हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार भारत के कुल क्षेत्रफल के 29.3 प्रतिशत भाग पर पर्वत, 27.7 प्रतिशत भाग पर पठार तथा 43 प्रतिशत भाग पर मैदान फैले हुए हैं। भू-आकृतिक दृष्टि से भारत को चार विभागों में बाँटा जा सकता है-

1. उत्तरी विशाल पर्वत,
2. उत्तरी विशाल मैदान,
3. थार का मरुस्थल
4. दक्षिण विशाल पठार,
5. तटवर्ती मैदान और द्वीप समूह।

1. उत्तरी विशाल पर्वत

भारत की उत्तर सीमा पर स्थित कश्मीर की उत्तरी पर्वत श्रृंखलाएँ तथा पठार, खास हिमालय पर्वत और अरूणाचल प्रदेश, नागालैंड, असम, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और मेघालय की पहाड़ियाँ सम्मिलित हैं। इन सभी को तीन वर्गों में रखा जा सकता है।
(i) हिमालय पर्वत
(ii) हिमालय पार की पर्वत श्रेणियाँ
(iii) पूर्वांचल या पूर्वी पहाड़ियाँ।

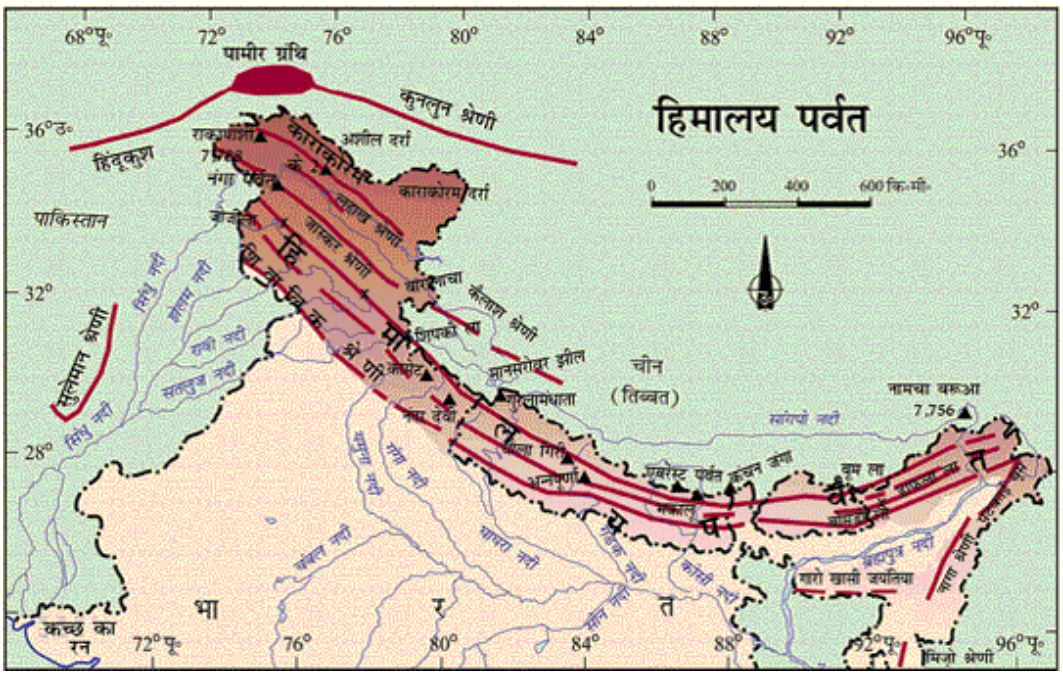

ट्रांस हिमालय

ट्रांस हिमालय का निर्माण हिमालय से पूर्व हो चुका था अर्थात् ट्रांस हिमालय, हिमालय से भी प्राचीन पर्वत श्रेणी है। अधिक ऊँचाई होने के कारण ट्रांस हिमालय वर्ष भर हिमाच्छादित रहता है, जिसके कारण यहाँ वनस्पतियां नहीं पायी जाती हैं। ट्रांस हिमालय के अंतर्गत काराकोरम, लद्दाख जास्कर और कैलाश आदि पर्वत श्रेणियाँ आती है।

हिमाद्रि श्रेणी

सबसे उत्तरी भाग में अवस्थित पर्वत श्रंखलाओं को 'हिमाद्रि' के नाम से जाना जाता है। इन्हें 'महान हिमालय' अथवा 'आंतरिक हिमालय' भी कहा जाता है। ये सबसे अधिक सतत् पर्वत श्रृंखलाएँ हैं। इनमें सर्वाधिक ऊँचे शिखर हैं। इन ऊँचे शिखरों की औसत ऊँचाई 6,000 मीटर है। इन पर्वत श्रृंखलाओं में हिमालय के सभी मुख्य शिखर हैं। महान हिमालय (हिमाद्रि) के वलय की प्रकृति असंममित है। ये श्रंखलाएँ सदैव बर्फ से ढकी रहती हैं। इनसे बहुत सी हिमानियों (बर्फ की नदियों) का प्रवाह होता है। हिमालय पर्वत के इस भाग का निर्माण क्रोड ग्रेनाइट से हुआ है।

हिमाचल श्रेणी

हिमाद्रि के दक्षिण में स्थित पर्वत श्रंखलाओं को 'हिमाचल' कहा जाता है। ये हिमालय की सबसे अधिक असम पर्वत श्रंखलाएँ हैं। इन्हें 'निम्न हिमालय' के नाम से भी जाना जाता है। इनका निर्माण मुख्य रूप से अत्याधिक संपीडित और परिवर्तित शैलों से हुआ है। इनकी ऊँचाई 3,700 मीटर से 4,500 मीटर के मध्य है। इनकी औसत चौड़ाई 50 किलोमीटर है। 'पीर पंजाल' निम्न हिमालय की सबसे लंबी और महत्वपूर्ण पर्वत श्रंखला है। इसके अलावा अन्य महत्वपूर्ण श्रृंखलाएँ 'धौलाधार' और 'महाभारत' श्रृंखलाएँ हैं। पीर पंजाल पर्वत श्रंखला में कश्मीर, कांगड़ा और कुल्लू की घाटियाँ अवस्थित हैं। ये हिमाचल (निम्न हिमालय) की महत्वपूर्ण घटियाँ हैं। हिमालय के इस अद्भुत क्षेत्र को 'पहाड़ी नगरों' के लिए जाना जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

शिवालिक श्रेणी

हिमालय की सबसे बाहरी पर्वत श्रृंखला को 'शिवालिक' के नाम से जाना जाता है। इनकी ऊँचाई लगभग 9,00 से 1,100 मीटर के मध्य है। इनकी चौड़ाई लगभग 10 से 50 किलोमीटर के मध्य है। इन पर्वत श्रृंखलाओं का निर्माण उत्तर दिशा में अवस्थित हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं से नदियों द्वारा लाये गये असंपिडित अवसादों से हुआ है। ये घाटियाँ बजरी और जालोढ़ की मोटी परत पर ढकी हुई हैं। शिवालिक और हिमाचल के मध्य अवस्थित लंबवत घाटी को 'दून' कहा जाता है। भारतवर्ष के कुछ महत्वपूर्ण दून हैं– देहरादून, कोटलीदून और पाटलीदून।

2. उत्तरी विशाल मैदान

इस मैदानी भाग को एक समतल मैदान के रूप में जाना जाता है किन्तु, ऐसा नहीं है। इस विशाल मैदान में भौगोलिक आकृतियां अर्थात इसके रचना करने वाले समाग्रियों के आकारों में भिन्नता पाई जाती है। पर्वतपदीय क्षेत्रो में इसका विकास बड़े-बड़े चट्टानी टुकड़ो से हुआ है। जबकि निम्न क्षेत्रो में छोटे-छोटे बारीक़ कणों से बना है।

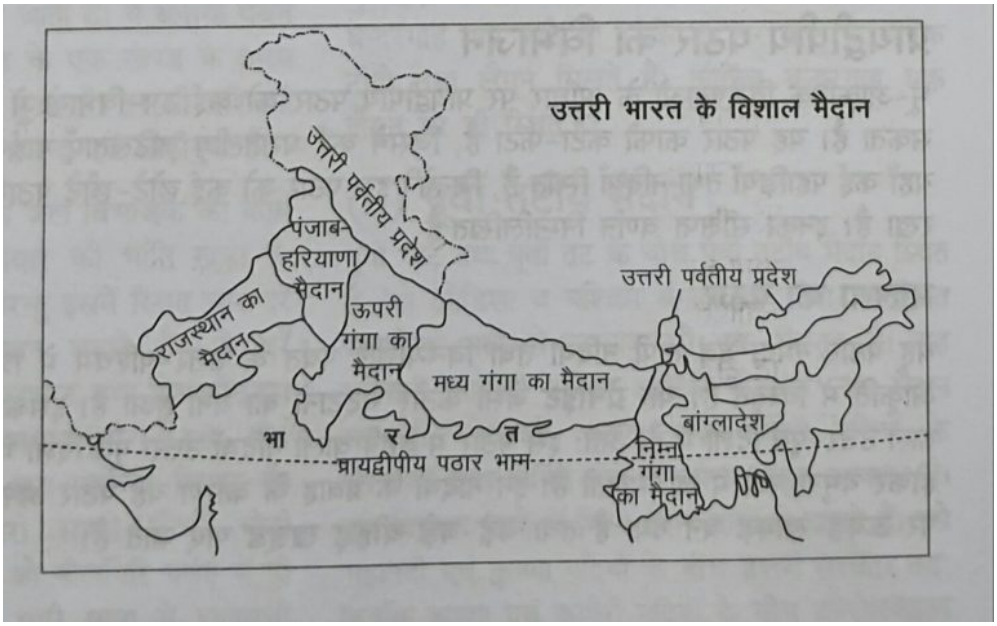

भाबर प्रदेश
इसका विस्तार शिवालिक हिमालय के गिरिपद क्षेत्रो में है तथा पश्चिम में सिंधु से पूर्व में तीस्ता नदी तक देखा जा सकता है। इसकी चैड़ाई 8 से 16 किमी के मध्य है। तथा इसका निर्माण हिमालय से निकलने वाली नदियों द्वारा लाये गए भारी पत्थर, कंकड़, तथा बजरी से हुआ है।

जिसके कारण इस क्षेत्र से गुजरने वाली छोटी नदियाँ विलुप्त हो जाती है तथा बड़ी नदियाँ कई धाराओं में विखंडित हो जाती है। इस प्रकार के चट्टानी क्षेत्र को पंजाब में 'भाबर' तथा असम में 'दुआर' कहा जाता है।

तराई प्रदेश
इसका विस्तार भाबर के दक्षिण में तराई क्षेत्र का विस्तार 10 से 20 किमी के मध्य है। भाबर में विलुप्त नदियाँ इस क्षेत्र में कई धराओं में प्रकट होती है जो निश्चित वहिकाएँ नहीं होती। है। यह क्षेत्र काफी नम तथा दलदलीय प्रकार का है। जिसके कारण यहाँ घने जंगल तथा वन्य जीवों की अधिकता पाई जाती है। इसी क्षेत्र में 'दुधुवा, काजीरंगा, मानस राष्ट्रीय उद्यान स्थित है। किन्तु वर्त्तमान समय में यहाँ पाए जाने वाले वनो को काटकर कृषि क्षेत्रो में परिवर्तित कर दिया गया है।

सिंधु नदी तंत्र
हिमालय से निकलने वाली नदियों का एक महत्वपूर्ण तंत्र है। यह न केवल भारत की बल्कि विश्व की भी एक बड़ी नदी प्रणाली है।सिंधु की सहायक नदियों में श्योक, गिलगित, जास्कर, हुंजा, नुब्रा, शिगार, गास्टिंग और द्रास जम्मू-कश्मीर और लद्दाख क्षेत्र की नदियां हैं।सिंधु नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मीथनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती है। पंचनद अर्थात् पंजाब की पांच मुख्य नदियां; सतलुज, व्यास, रावी, चेनाब और झेलम।
अंत में सिंधु नदी कराची के पूर्व में अरब सागर में गिरती है।

गंगा नदी तंत्र
गंगा के दाहिने तट पर आकर मिलने वाली नदियां मुख्य रूप से यमुना, चम्बल, सिन्ध, बेतवा, केन, टोन्स और सोन नदियां हैं|गंगा नदी के दाहिने तट पर आकर मिलने वाली प्रायद्वीपीय पठार की नदियां चम्बल, सिन्ध, बेतवा, केन, टोन्स और सोन हैं|

ब्रह्मपुत्र नदी तंत्रब्रह्मपुत्र नदी दुनिया की बड़ी नदियों में से एक है।

थार का मरुस्थल
एक उष्ण मरुस्थल है। विश्व के उष्ण मरुस्थलों में इसका स्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से 9वाँ, एवं शीत और उष्ण दोनों में इसका स्थान 17वाँ बड़ा मरुस्थल है। यह विश्व का सबसे घना बसा हुआ मरुस्थल है। इसमें सिर्फ राजस्थान की कुल जनसंख्या का 40 प्रतिशत जनसंख्या इसमें निवास करती है। रेडकिल्फ़ रेखा भारतीय थार मरुस्थल और पाकिस्तान के मरुस्थल को अलग करता है। पाकिस्तान में इसे थाल या चेलिस्तान का मरुस्थल कहा जाता है।

दक्षिण का पठार

राजस्थान का दक्षिणी-पूर्वी भाग एक पठारी भाग है, जिसे 'दक्षिणी-पूर्वी पठार एवं हाडौती के पठार' के नाम से जाना जाता है। यह मालवा के पठार का विस्तार है | इस क्षेत्र की औसत ऊँचाई 500 मीटर है तथा यहाँ अर्द्ध-चन्द्राकार रूप में पर्वत श्रेणियों का विस्तार है जो क्रमशः बूंदी और मुकुन्दवाड़ा की पहाड़ियों के नाम से जानी जाती है। यहाँ चम्बल नदी और इसकी प्रमुख सहायक कालीसिंह , परवन और पार्वती नदियाँ प्रवाहित है, उनके द्वारा निर्मित मैदानी प्रदेश कृषि के लिये उपयुक्त है।

पठार

एक पठार एक समतल, ऊंचा भू-आकृति है जो कम से कम एक तरफ आसपास के क्षेत्र से तेजी से ऊपर उठता है। पठार हर महाद्वीप पर पाए जाते हैं और पृथ्वी की एक तिहाई भूमि पर कब्जा कर लेते हैं। वे पहाड़ों, मैदानों और पहाड़ियों के साथ चार प्रमुख भू-आकृतियों में से एक हैं।

छोटा नागपुर पठार

https://www.evidyarthi.in/

झारखंड राज्य का अधिकतर हिस्सा एवं पश्चिम बंगाल, बिहार व छत्तीसगढ़ के कुछ भाग इस पठार में आते हैं। इसके पूर्व में सिन्धु-गंगा का मैदान और दक्षिण में महानदी हैं। ये पठार झारखंड में फैला हुआ है ।

दक्कन का पठार

8 भारतीय राज्यों में विस्तृत है। इसमें तेलंगाना, महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के महत्वपूर्ण हिस्सों को शामिल करते हुए पर्यावासों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। यह दो पर्वत श्रृंखलाओं, पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट के मध्य स्थित है।

तटवर्ती मैदान और द्वीप समूह

पूर्वी तटीय मैदान उत्तर में गंगा नदी के मुहाने से ले कर कन्याकुमारी तक बंगाल की खाड़ी के तट के साथ-साथ फैला है। पश्चिमी तटीय मैदान की तुलना में यह अधिक चौड़ा है।

(i) इस मैदान में महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के डेल्टा सम्मिलित हैं।
(ii) इस मैदान में चिल्का और पुलीकट दो बड़े-बड़े अनूप (लैगून) हैं।
(iii) ये झीलें बंगाल की खाड़ी के थोड़े से जलीय भाग के बालू-भित्ति के द्वारा घिर जाने से बनी हैं।
(iv) चिल्का महानदी डेल्टा के दक्षिण में हैं। यह 75 किलोमीटर लम्बी है।
(v) पुलीकट झील चेन्नई नगर के उत्तर में है।
(vi) गोदावरी और कृष्णा नदियों के डेल्टाओं के मध्य में कोल्लेरू झील है।
(vii) पूर्वी तटीय मैदान बहुत उपजाऊ है। इसमें धान की फसल बहुत अच्छी होती है।

भारत का भौतिक पश्चिमी तटीय मैदान उत्तर में कच्छ के तट से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक अरब विन्यास सागर के साथ-साथ फैला है।

(i) गुजरात के मैदान को छोड़कर यह मैदान पूर्वी तटीय मैदान से कम चौड़ा है।
(ii) दक्षिणी गुजरात से लेकर मुंबई तक पश्चिमी तटीय मैदान अपेक्षाकृत चौड़ा है और दक्षिण की ओर संकरा होता गया है।
(iii) गुजरात, कच्छ के रन तथा काठियावाड़ के मैदानों में कहीं-कहीं चट्टानी टीले और छोटी पहाड़ियां दिखाई पड़ती हैं।
(iv) गुजरात का मैदान काली मिट्टी से बना है।
(v) उत्तर में दमण से लेकर दक्षिण में गोवा तक लगभग 500 कि.मी. का तटीय भाग कोंकण कहलाता है। यह कटा-फटा है।
(vi) इसमें कई छोटी-छोटी नदियां बहती हैं।
(vii) गोवा से मंगलोर तक के तट को कर्नाटक तट कहते हैं।
(ix) मंगलौर से कन्याकुमारी तक के तट को मलाबार तट कहते हैं।
(x) यहां तटीय मैदान कुछ चौड़ा है।
(xi) मलाबार तट में अनेक लंबे और सकरे अनूप हैं।
(xii) 80 कि.मी. से भी अधिक लंबा वेम्बनाड ऐसा ही एक अनूप है। इसी पर कोच्चि बन्दरगाह बसा है।